इकाई-IV

13. चिट्ठी का सफ़र

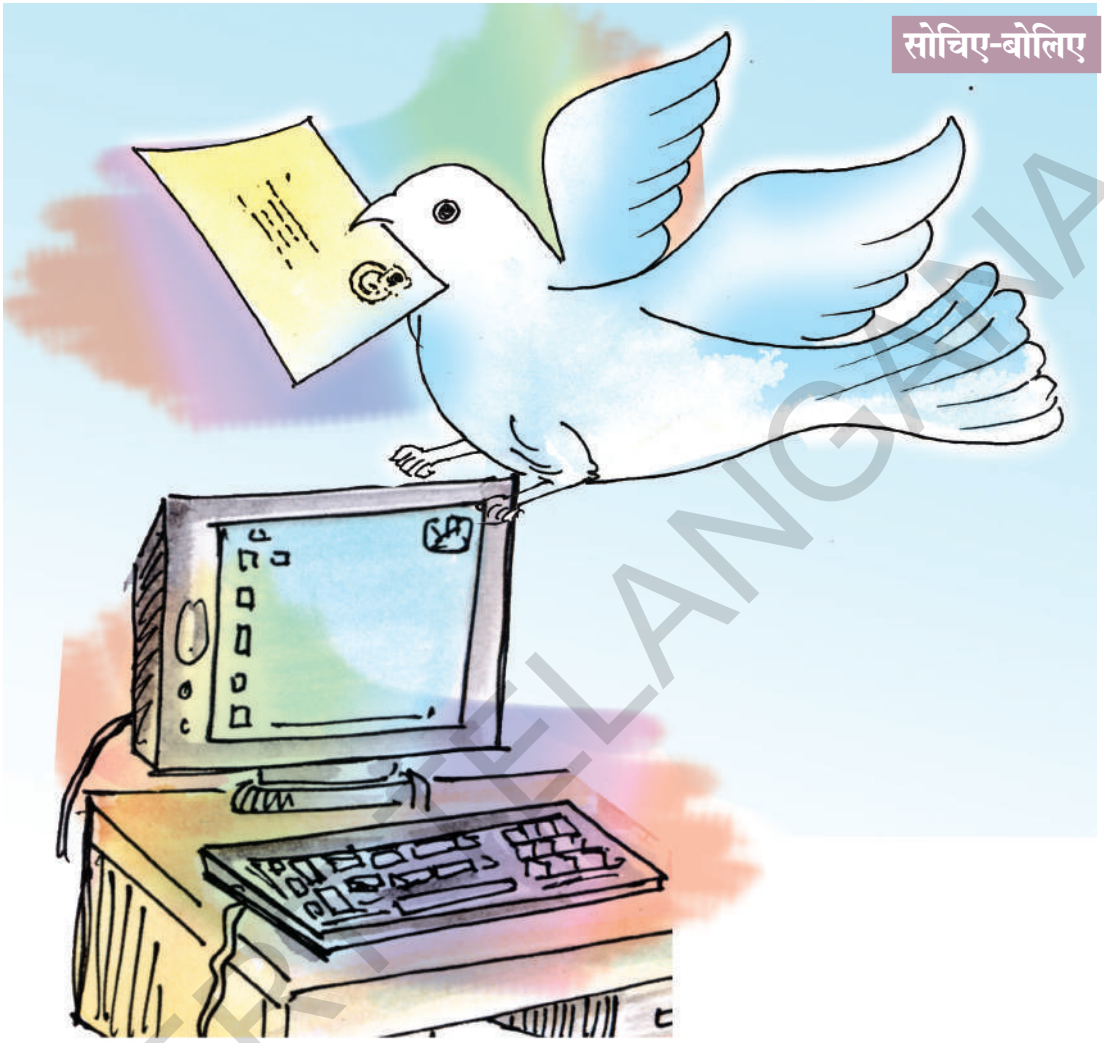

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. कबूतर क्या कर रहा है?
3. चिट्ठी पहुँचाने के लिए किन-किन साधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

अपनी दस-बारह साल की ज़िंदगी में तुमने कुछ पत्र लिखे ही होंगे। वे पत्र अपने सही पते और समय पर किस तरह पहुँचे होंगे - यह बहुत-सी बातों पर निर्भर करता है। जैसे कि, चिट्ठी किस स्थान से किस स्थान पर भेजी जा रही है, संदेश पहुँचाने की कितनी जल्दी है, तुमने पूरा और ठीक पता लिखा है कि नहीं, तुमने उस पर डाक टिकट लगाया है कि नहीं, आदि। अब प्रश्न यह उठते हैं कि -

- आखिर चिट्ठी पर डाक टिकट लगाया ही क्यों जाए?
- पूरे और ठीक पते से क्या मतलब है?
- ज़रूरत पड़ने पर संदेश को जल्दी कैसे पहुँचाया जाए?
- स्थान बदलने से चिट्ठी के पहुँचने पर क्या असर पड़ता है?

इनमें से कुछ सवालों के लिए ज़रा नीचे दिए गए लिफ़ाफ़ों को गौर से देखिए।

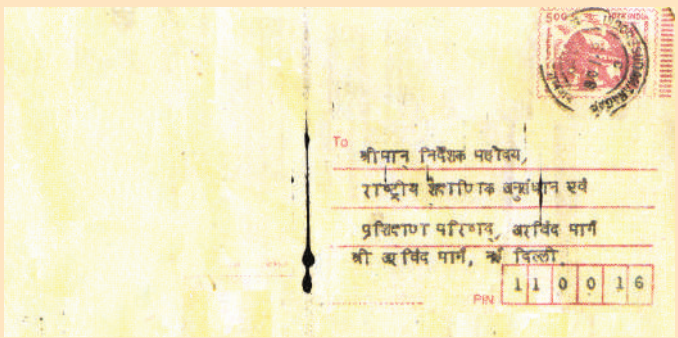

SCERT TELANGANA

ये दोनों पते किस तरह से भिन्न हैं? गांधीजी को भेजे गए पत्र में पते की जगह पर लिखा है - ''महात्मा गांधी, जहाँ हो वहाँ वर्धा।'' जबकि लिफ़ाफे पर इमारत या संस्थान से लेकर शहर तक का नाम लिखा हुआ है। पते में सबसे छोटी भौगोलिक इकाई से शुरू करके बड़ी की ओर बढ़े हैं। छोटी से बड़ी भौगोलिक इकाई का मतलब यह हुआ कि घर के नंबर के बाद गली-मोहल्ले का नाम, फिर गाँव, कस्बे, शहर के जिस हिस्से में है उसका नाम, फिर गाँव या शहर का नाम। शहर के नाम के बाद लिखे अंक को पिनकोड कहते हैं। हर जगह को एक पिनकोड दिया गया है। यह सोचने लायक बात है कि आखिर पिनकोड की ज़रूरत क्या है? हमारे देश में अनेक ऐसे कस्बे/गाँव/शहर हैं जिनके नाम एक जैसे हैं। पते के बाद पिन कोड लिखने से गंतव्य स्थान का पता लगाने में डाक छाँटने वाले कर्मचारियों को मदद मिलती है और पत्र जल्दी बाँटे जा सकते हैं।

पिनकोड की शुरूआत 15 अगस्त 1972 को डाक तार विभाग ने पोस्टल नंबर योजना के नाम से की। ज़ाहिर है कि गांधीजी को मिले इस पत्र और उन्हें मिले किसी भी पत्र पर पिनकोड का इस्तेमाल नहीं किया गया था। फ़र्क सिर्फ़ पिनकोड का ही नहीं है । समय के साथ डाक सेवाओं में निरंतर बदलाव और विकास होता जा रहा है ।

पिन शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर (**P**ostal **I**ndex **N**umber) का छोटा रूप है। किसी भी जगह का पिनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास स्थानीय अर्थ है।

उदाहरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी को भेजे गए लिफ़ाफ़े

पर लिखा अंक-110016

इससे पहले स्थान पर दिया गया अंक यह बताता है कि यह पिनकोड दिल्ली,हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, पंजाब या जम्मू-कश्मीर का है। अगले दो अंक यानि 10 यह तय करते हैं कि यह दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के उपक्षेत्र दिल्ली का कोड है। अगले तीन अंक यानी 016 दिल्ली उपक्षेत्र के ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।

- अब तुम्हारा स्कूल जहाँ पर है उस इलाके का पिनकोड पता करो।
- अपने घर के इलाके का पिनकोड नंबर भी पता करो।

पिनकोड की जानकारी डाकघर से प्राप्त की जा सकती है। डाकघरों में टेलीफोन डाइरेक्टरी की तरह पिनकोड डाइरेक्टरी भी मिलती है। तुम्हारे इलाके का पिनकोड तो तुम्हारे मोहल्ले में लगे बाक्स पर ही लिखा होगा।

- प्रमुख जगहों / शहरों के पिनकोड नंबर तुम्हें कहाँ-कहाँ मिल सकते हैं?

SCERT TELANGANA

टिकट-संग्रह का शौक काफ़ी लोकप्रिय है। धीरे-धीरे इसमें टिकट-संग्रह के अलावा डाक से जुड़ी और बहुत-सी चीज़ें शामिल हो गई हैं। इसको डाक का विज्ञान कहना गलत नहीं होगा। क्या तुम जानते हो इस विज्ञान को क्या नाम दिया गया है?

. . . . . .

बहुत पुराने समय में कबूतरों के द्वारा संदेश भेजे जाते थे। जब संदेशवाहक कबूतरों की बात हो रही है तो उन इंसानों की बात कैसे न हो जो ऐसे समय डाक पहुँचाने का काम करते रहे, जब संचार और परिवहन के साधन बेहद सीमित थे! बात हो रही है उन हरकारों की जो पैदल ही आम आदमी तक चिट्ठी-पत्री पहुँचाने का काम करते रहे। राजा, महाराजाओं के पास घुड़सवार हरकारे हुआ करते थे। हरकारों को न सिर्फ़ हर तरह की जगहों पर पहुँचना होता था, बल्कि डाक की रक्षा भी करनी होती थी। डाकू, लुटेरों या जंगली जानवरों की चपेट में आने का डर हमेशा बना रहता था। आज भी भारतीय डाक सेवा दुर्गम व पहाड़ी इलाकों तक डाक पहुँचाने के लिए हरकारों पर निर्भर करती है। जम्मू-कश्मीर के लद्दाख खंड में पदम (ज़ंस्कार) जैसी कई जगहें हैं जहाँ हरकारे डाक पहुँचाते हैं।

आजकल तो संदेश भेजने के नए-नए और तेज़ साधन आसानी से उपलब्ध हो गए हैं। डाक बाँटने में हवाई जहाज़, पानी के जहाज़ और जाने कौन-कौन से साधन इस्तेमाल किए जा रहे हैं। डाक-विभाग भी पत्र, मनीआर्डर के साथ-साथ ई-मेल, बधाई कार्ड आदि लोगों तक पहुँचा रहा है। कबूतरों की उड़ान से लेकर हवाई डाक सेवाओं

SCERT TELANGANA

तक का सफ़र दिलचस्प करने वाला है। यह सोचकर आश्चर्य होता है कि कबूतर जैसा पक्षी संदेशवाहक भी हो सकता है। कबूतर की कई प्रजातियाँ होती हैं और ये सभी संदेश लाने ले जाने का काम नहीं कर सकतीं। गिरहबाज़ या हूमर वह प्रजाति है जिसे प्रशिक्षित करके डाक संदेश भेजने के काम में लाया जाता है। आखिर कबूतर अपना रास्ता ढूँढ़ कैसे लेता है? उन प्रवासी पक्षियों के बारे में सोचो और पता करो कि वे कैसे सैकड़ों मील का रास्ता और सही जगह तय कर पाते हैं।

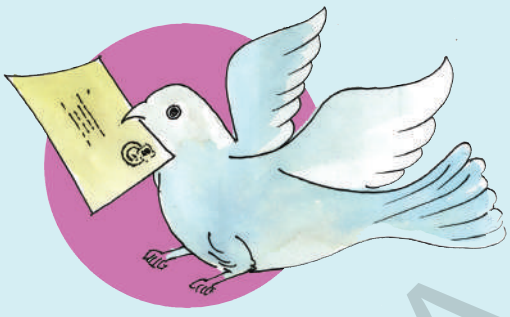

उड़ीसा पुलिस खास तौर पर हूमर कबूतरों का इस्तेमाल राज्य के कई दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लिए कर रही है। कानून-व्यवस्था, संकट और अन्य मौकों पर संदेश के लिए ये कबूतर बहुत उपयोगी साबित हुए। कबूतरों की संदेश सेवा बहुत सस्ती है और उन पर खास खर्च नहीं आता है। इन कबूतरों का जीवन 15-20 साल होता है और 8-10 साल तक वे बहुत अच्छा काम करते हैं। स्वस्थ कबूतर एक दिन में एक हज़ार किलोमीटर तक का सफ़र कर सकता है। यदि कोई महत्वपूर्ण संदेश पहुँचाना हो तो दो कबूतरों को भेजा जाता है ताकि बाज के हमले जैसी अनहोनी स्थिति में भी दूसरा कबूतर संदेश पहुँचा दे।

शायद यह पढ़कर तुम एक ऐसे कबूतर की कहानी पढ़ना चाहो जो दूसरे विश्व युद्ध में संदेश पहुँचाता था। इस कबूतर की कहानी नेशनल बुक ट्रस्ट से अँग्रेज़ी में छपी एक किताब में दी गई है। किताब का नाम है 'ग्रेनेक', जो कि इस किताब के हीरो का भी नाम है। अगर तुम हिंदी में पढ़ना चाहते हो तो क्यों न नेशनल बुक ट्रस्ट को पत्र लिखो कि वे इस किताब को हिंदी में भी छापें। यह रहा उनका पता - नेशनल बुक इंडिया, ए-5 पार्क, नई दिल्ली- 110016

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. गांधी जी को सिर्फ उनके नाम और शहर के नाम के सहारे पत्र कैसे पहुँच गया होगा?
2. अगर एक पत्र में पते के साथ किसी का नाम न हो, तो क्या पत्र ठीक जगह पर पहुँच जाएगा? इसमें क्या परेशानी है? बताइए।
3. पते में पिनकोड न होने से क्या समस्याएँ आ सकती हैं?
4. यदि आपको पत्र लिखने को कहा जाएगा, तो आप किसे पत्र लिखना पसंद करेंगे? कौन-सी बात लिखेंगे।

पढ़िए

I. 'डाकघर' से संबंधित शब्दों को पाठ में रेखांकित कर लिखिए।
II. संदेश भेजने में उपयोगी कबूतर की प्रजातियों के नाम लिखिए।
III. डाक बाँटने में किन-किन साधनों का उपयोग होता है, पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।
IV. पाठ पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पूरे और ठीक पते से क्या मतलब है? उन्हें किस क्रम में लिखना चाहिए?
2. पिनकोड की जानकारी आप कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं? पाठ पढ़कर बताइए।
3. हरकारों को किस-किस तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता था?

लिखिए

1. स्थान बदलने से पत्र के पहुँचने पर क्या असर पड़ता है?
2. डाक टिकटें और पुराने पत्रों को इकट्ठा करने से क्या-क्या जानकारी प्राप्त कर सकते हैं?
3. चिट्ठी पर डाक टिकट क्यों लगाया जाता है? किस आधार पर लगाया जाता है?
4. आपके विचार में क्या आगे चलकर भी पत्र का उपयोग होगा? यदि होगा तो किसलिए होगा?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

I नीचे शब्दकोश का एक अंश दिया गया है जिसमें 'संचार' शब्द का अर्थ भी दिया गया है।

संगीतज्ञ - संगीत जानने वाला, संगीत की कला में निपुण।

संग्रह - 1. जमा करना, इकट्ठा करना, एकत्र करना, संचय।

प्रयोग. दीपक आजकल पक्षियों के पंखों का संग्रह करने में लगा है।

2. इकट्ठी की हुई चीजों का समूह या ढेर, संकलन जैसे - टिकट-संग्रह, निबंध संग्रह।

संचार - 1. किसी एक संदेश को दूर तक या बहुत-से लोगों तक पहुँचाने की क्रिया या प्रणाली, कम्यूनिकेशन। उ. टेलीफ़ोन, टेलीविजन, सेटेलाइट आदि संचार के माध्यमों से दुनिया आज छोटी हो गई है।

2. किसी चीज़ का प्रवाह, चलना, फैलना, जैसे- शरीर में रक्त का संचार, विद्युत का संचार।

(1) बताइए कि कौन-सा अर्थ पाठ के संदर्भ में ठीक है?

(2) शब्दकोश में दिए गए शब्दों के साथ क्या-क्या जानकारी दी गई होती है?

II **भारत के कुछ प्रमुख शहरों के नाम और उनका पिनकोड लिखिए।**

1. नई दिल्ली - **110016**
2. कलकत्ता .....
3. ....
4. ....
5. ....

III **रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) यह सोचने लायक <u>बात</u> है।

(2) बहुत पुराने समय में <u>कबूतरों</u> के द्वारा संदेश भेजे जाते थे।

(3) वह <u>पता</u> किस तरह से भिन्न है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

हमारे जवान देश की रक्षा के लिए अपने परिवार से बहुत दूर दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में सीमा पर तैनात रहते हैं। जब उन्हें अपने परिवार वालों की चिट्ठी मिलती है तो उन्हें किस प्रकार खुशी होती होगी। कल्पना करके नीचे दी गयी कविता आगे बढ़ाइए -

चिट्ठी आई है, मेरी
चिट्ठी आई है .....
माँ ने भेजा है .....
पिता का मिला है आशीर्वाद

SCERT TELANGANA

भाई ने .....

.....

.....

.....

प्रशंसा

पत्र पहुँचाने के लिए कई मुश्किलों का सामना करते हुए डाकिया हमें चिट्ठी, पत्र, पार्सल पहुँचाता है। डाकिये के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

निम्न वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और उनके अंतर को समझिए।

(1) मैंने पूरा और ठीक पता लिखा था।

(2) मैंने पूरा और ठीक पता लिखा है।

(3) मैं पूरा और ठीक पता लिखूँगा।

अब आप **देखा था**, **पढ़ी है**, **खेलूँगा**, जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए उपर्युक्त तरीके से तीन-तीन वाक्य बनाइए।

परियोजना कार्य

चिट्ठी भेजने के लिए आमतौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफ़ाफ़ा इस्तेमाल किया जाता है । डाकघर जाकर इनका मूल्य पता करके लिखिए।

पोस्टकार्ड .....

अंतर्देशीय पत्र.....

लिफ़ाफ़ा .....

डाक टिकट इकट्ठा कीजिए। एक रुपये से लेकर दस रुपये तक के डाक टिकटों को क्रम से कॉपी में चिपकाइए। इकट्ठा किए गए डाक टिकटों पर अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर चिट्ठी के सफ़र के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

उपवाचक

डाकिए की कहानी, कँवरसिंह की ज़ुबानी

शिमला की माल रोड पर जनरल पोस्ट ऑफ़िस है। उसी पोस्ट ऑफ़िस के एक कमरे में डाक छाँटने का काम चल रहा है। सुबह के 11.30 बजे हैं, खिड़की से गुनगुनी धूप छनकर आ रही है। इस धूप का मज़ा लेते हुए दो पैकर और तीन महिला डाकिया फटाफट डाक छाँटने का काम कर रहे हैं। वहीं पर मैंने सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिया कँवरसिंह जी से बात की। यही बातचीत आगे दी जा रही है।

- **आपका शुभ नाम**

  मेरा नाम कँवरसिंह है। मैं हिमाचल प्रदेश से शिमला ज़िले के नेरवा गाँव का निवासी हूँ। मेरी उम्र पैंतालीस साल है।

- **आपके परिवार में कौन-कौन हैं? उनके बारे में कुछ बताइए।**

  मेरे चार बच्चे हैं। तीन लड़कियाँ और एक लड़का। दो लड़कियों की शादी हो चुकी हैं। मेरा एक और बेटा भी था। वह मेरे गाँव में एक पहाड़ी से लकड़ियाँ लाते हुए गिर गया जिससे उसकी मौत हो गई।

- **आपके बेटे के साथ जो हुआ उसका मुझे बहुत दुख है। आपके इलाके में इस तरह की घटनाएँ क्या अक्सर होती हैं?**

  जी, ऐसी घटनाओं का होना असाधारण नहीं है। यहाँ हर साल तिरछी ढलानों या ढांको से घास काटते हुए कई औरतें गिर कर मर जाती हैं। फिर भी यहाँ ऐसे ही रास्ते से चलना पड़ता है क्योंकि दूसरे कोई रास्ते होते ही नहीं। हमारे गाँव में अभी तक बस नहीं पहुँच पाती है। हिमाचल में हज़ारों ऐसे गाँव हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँच सकते हैं।

- **फिर आपके बच्चे पढ़ने कैसे जाते होंगे?**

  मेरे बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते हैं। स्कूल लगभग पाँच किलोमीटर दूर है। मेरी एक लड़की दसवीं तक पढ़ी है, दूसरी बारहवीं तक। तीसरी लड़की बारहवीं कक्षा में पढ़ रही है। बेटा दसवीं में पढ़ता है।

- **आप जहाँ काम करते हैं वहाँ आपके अलावा और कौन-कौन हैं? क्या आपको डाकिया ही कहकर बुलाते हैं?**

  पहले मैं भारतीय डाक सेवा में ग्रामीण डाक सेवक था। अब मैं पैकर बन गया हूँ। पर हूँ वही नीली वर्दी वाला डाक सेवक।

SCERT TELANGANA

- **डाक सेवक को क्या-क्या करना होता है?**

मुझे! मुझे बहुत कुछ करना होता है। चिट्ठियाँ,रजिस्ट्री पत्र, पार्सल, बिल लोगों की पेंशन आदि छोड़ने गाँव-गाँव जाता हूँ।

- **क्या यह सब अभी भी करना पड़ता है? क्योंकि अब तो सूचना और संदेश देने के बहुत से नए तरीके आ गए हैं।**

शहरों में भले ही आज संदेश देने के कई साधन आ गए हैं। जैसे- फ़ोन,मोबाईल, ई-मेल वगैरह, लेकिन गाँव में तो आज भी संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा ज़रिया डाक ही है। इसलिए गाँव में लोग डाकिए का बड़ा आदर और सम्मान करते हैं। अपनी चिट्ठी आदि पाने के लिए डाकिए का इंतजार करते हैं।

- **हमने सुना है कि हमारी डाक सेवा दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है, यह भला कैसे?**

सुना तो आपने बिल्कुल ठीक है। हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी। केवल पाँच रुपये में देश के किसी भी कोने में हम चिट्ठी भेज सकते हैं। पोस्टकार्ड तो केवल पचास पैसे का ही है। यानी पचास पैसे में भी हम देश के हर कोने में अपना संदेश भेज सकते हैं।

- **आपको अपनी नौकरी में बहुत मजा आता होगा?**

मुझे अपनी नौकरी बहुत अच्छी लगती है। जब मैं दूर नौकरी करने वाले सिपाही का मनीऑर्डर लेकर उसके घर पहुँचता हूँ तो उसके बूढ़े माँ-बाप का खुशी भरा चेहरा देखते ही बनता है। ऐसे ही जब किसी का रजिस्टरी पत्र पहुँचाता हूँ जिसमें कभी रिज़ल्ट, कभी नियुक्ति पत्र होता है तो लोग बहुत खुश होते हैं। बूढ़े दादा और बूढ़ी नानी तो पेंशन के पैसे मिलने पर बहुत खुश होते हैं। छह महीनों तक, वे मेरा इसके लिए इंतजार करते हैं। हिमाचल में बूढ़े लोगों को पेंशन हर छह महीनों के बाद इकट्ठी ही दी जाती है।

- **आप क्या शुरू से इसी डाकघर में काम कर रहे हैं?**

शुरू में तो मैंने लाहौल स्पीति जिले के किब्बर गाँव में तीन साल तक नौकरी की है। यह हिमाचल का सबसे ऊँचा गाँव है। इसके बाद पाँच साल तक इसी जिले के काज़ा में और पाँच साल तक किन्नौर जिले में नौकरी की है। उस वक्त इन गाँवों में टेलीफोन नहीं थे। बसें भी सिर्फ़ मुख्यालयों तक ही जाती थीं। अभी भी कई ऐसे गाँव हैं जहाँ न तो बस जाती है और न ही वहाँ टेलीफ़ोन है। ऐसी जगह में ग्रामीण डाक सेवक का बहुत मान किया जाता है।

- **आप पहाड़ी इलाके में रहते हैं। ज़ाहिर है डाक पहुँचाना आसान काम तो नहीं होगा।**

हाँ, मुश्किलें तो आती ही हैं। जब मैं किन्नौर जिले के मुख्यालय रिकांगपिओ में नौकरी करता था तो सुबह छह बजे मेरी ड्यूटी शुरू हो जाती थी। मैं छह बजे शिमला जाने वाली बस में डाक का बोरा रखता था और रात को आठ बजे शिमला से आने वाली बस से डाक का बोरा उतारता था। पैकर को ये सब काम करने पड़ते हैं। किन्नौर और लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश

SCERT TELANGANA

के बहुत ठंडे तथा ऊँचे जिले हैं। इन जिलों में अप्रैल महीने में भी बर्फ़बारी हो जाती है। बर्फ़ में चलते हुए पैरों को ठंड से बचाना पड़ता है। वरना स्नोबाइट हो जाते हैं जिससे पैर नीले पड़ जाते हैं और उनमें गैंगरीन हो जाती है जिससे उँगलियाँ झड़ सकती हैं। इन जिलों में मुझे एक घर से दूसरे घर तक डाक पहुँचाने के लिए लगभग 26 किलोमीटर रोज़ाना चलना पड़ता था। हिमाचल में एक गाँव से दूसरे गाँव छोटे-छोटे होते हैं। एक गाँव में बस आठ से दस या कभी-कभी छह-सात घर ही होते हैं। इसलिए चलना काफ़ी पड़ता है। चलना तो खैर हमारी आदत में ही शामिल हो चुका है ग्रामीण डाकिए की जिंदगी में तो चलना ही चलना है।

- **आपने बताया था कि पहले आप डाक सेवक थे, अब पैकर हैं, इसके आगे भी कोई प्रमोशन है क्या?**

पैकर के बाद डाकिया बन सकते हैं। बस एक इम्तिहान पास करना पड़ता है। अभी तो काम के हिसाब से हमारा वेतन काफ़ी कम रहता है। सारा दिन कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले बाबू का वेतन कहीं ज़्यादा होता है। पैकर का वेतन बाबू के जितना ही हो जाता है। अब तो डाकिए की नौकरी में लगना भी बहुत मुश्किल हो चुका है। हममें से जितने डाकिए रिटायर हो चुके हैं, उनकी जगह नए डाकियों को नहीं रखा जा रहा है। इससे पुराने डाकियों पर काम का बोझ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। न जाने, आने वाला समय कैसा होगा?

- **काम के दौरान कभी कोई बहुत ख़ास बात हुई हो?**

एक घटना आपको सुनाता हूँ। मेरा तबादला शिमला के जनरल पोस्ट ऑफिस में हो गया था। वहाँ मुझे रात के समय रैस्ट हाउस और पोस्ट ऑफिस चौकीदारी का काम दिया गया था। यह 1998 की बात है। 29 जनवरी को रात लगभग साढ़े दस बजे का समय था। बाहर से किसी ने पोस्ट ऑफिस का दरवाज़ा खटखटाया। मैंने पूछा 'कौन है' जवाब आया 'दरवाजा खोलो तुमसे बात करनी है।' मैंने दरवाज़ा खोला तो अचानक पाँच-छह लोग अंदर घुसे और मुझे पीटना शुरू कर दिया। मैंने पूछा क्यों पीट रहे हैं? तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। सारे ऑफ़िस की लाईटे बंद कर दी। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता मेरे सिर कर किसी भारी चीज़ से कई बार मारा जिससे मेरा सिर फट गया। मैं लगातार चिल्लाता रहा। उसके बाद मै बेहोश हो गया और मुझे कुछ भी पता न चला। अगले दिन जब मुझे होश आया तो मैं शिमला के इंदिरा गाँधी मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में दाखिल था। सिर में भयंकर दर्द हो रहा था। उन दिनों मेरा 17 साल का बेटा मेरे साथ ही रहता था। उसी से पता चला कि मेरे चिल्लाने की आवाज सुनकर लड़का और ऑफ़िस के दूसरे लोग जो नज़दीक ही रहते थे, दरवाजों के शीशे तोड़कर अंदर आए और मुझे अस्पताल पहुँचाया। मेरे सिर पर कई टाँके लगे थे। उसकी वजह से आज भी मुझे एक आँख से दिखाई नहीं देता है। सरकार ने मुझे जान पर खेलकर डाक की चीज़ें बचाने के लिए 'बेस्ट पोस्टमैन' का इनाम दिया। यह इनाम 2004 में मिला। इस इनाम में 500 रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। मैं और मेरा परिवार बहुत खुश हुए। आज भी मैं गर्व से कहता हूँ - ''मैं बेस्ट पोस्ट मैन हूँ।''

-प्रतिमा शर्मा

SCERT TELANGANA